

विवाह

मैं कभी साँचों के लिए नहीं बना — न जन्म से, न इकसठ की उम्र में। मेरे विचार हमेशा सीधी रेखा में कर्म की ओर कूच करते रहे हैं, और जो शब्द पीछे छूट गए, वे केवल प्रतिध्वनि बनकर बचे — एक लहज़ा, एक इशारा, एक खामोशी जो वाक्य से ज़्यादा कह जाती थी।

और यह शुरू हुआ जब मैंने बीसवीं सदी केशुरुआती दशकों के जोड़ों को देखा। मज़बूत विवाह, लंबी उम्रें, और धोखे — जिन्हें सबसे पुराने दर्शन से सम्भाला जाता था जो कभी गढ़ा गया: अगर दिल न देखे, तो आँख को दुख नहीं होता। उन दिनों बेवफ़ाई एक पारिवारिक निवेश हुआ करती थी। बच्चे उसका उपोत्पाद थे, काम ही नियति था, और शादी ही एकमात्र असली खर्च — लिफ़ाफ़ों से जश्न चुक जाता, बाक़ी जोड़े के ज़िम्मे था। लोग कहते हैं ऐसा इसलिए था क्योंकि टीवी नहीं था। कोई टॉक-शो नहीं। कोई भटकाव नहीं। बस भोजन, अंतरंगता, और इंसान होने का आदिम सत्य।

तो मैंने क्या किया? मैंने शादियाँ करनी शुरू कर दीं। हर जगह।

पोलैंड, १९८५। शादी-पूर्व का चरण एक कृति था: वह तुम्हें सब कुछ दे देती, रिश्तेदार तुम्हें पूजते, और सब मुस्कुराते क्योंकि सब जानते थे कि रस्म के बाद... अगले पचास सालों के लिए तुम अकेले थे।

और क्योंकि मैं आठ साल एक कैथोलिक बोर्डिंग स्कूल में पला-बढ़ा, मैंने दो चरणों पर ज़िद की: पहले आध्यात्मिक रस्म, फिर क़ानूनी कागज़ी कार्यवाही। बहुत बाद में। बहुत देर से। असल में... कभी नहीं।

१९८५ और १९९२ केबीच, दुनिया को लगता था कि मैंने लगभग तीन बार शादी की। रस्में बेजोड़ थीं। क़ानूनी हिस्सा? मैं हमेशा “अनुपलब्ध” रहा।

फिर ज़िंदगी ने वही किया जो वह हमेशा करती है: उसने मेरे घर से सौ मीटर दूर रहने वाली एक औरत भेज दी। उसने पूरा सिस्टम तोड़ दिया। उसने मुझसे इस यक़ीन के साथ शादी की कि यह मेरा ही विचार था। मैंने उसे यही मानने दिया। क्योंकि उससे हारना ही अकेली असली जीत लगती थी। नतीजा: तीन बच्चे, तैंतीस साल का विवाह।

लेकिन कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती। १९९५ और २०१५ केबीच, मैंने दुनिया भर में ग्यारह और प्रतीकात्मक विवाह जमा किए। वही रस्म, वही जादू, वही पलायन। लोगों ने मुझ पर यक़ीन नहीं किया। अब भी नहीं करते।

और एक दिन मुझे एक सीधी-सी बात समझ आई: मैं धरती की हर औरत से शादी नहीं कर सकता था। मैं उन सबको नहीं रख सकता था। पर मैं पलों को रख सकता था। एक-एक करके। क्योंकि औरतें — सब की सब — हमेशा हम मर्दों से श्रेष्ठ रही हैं।

और मैं अब भी यहीं हूँ, अब भी उन्हें जीतने की कोशिश में, एक पल एक बार में। क्योंकि यही अकेला विवाह है जिस पर मैंने ईमानदारी से कभी यक़ीन किया।

नान्दी

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com